कविता

मेरी पेंसिल

आबान सिद्दिकी*

मेरी प्यारी पेंसिल, मेरी न्यारी पेंसिल।
अलग-अलग रंगों में है आती,
काम सबके है खूब कर जाती।

जितना चाहु उतना लिखती,
मेरे विचारों को व्यक्त है करती।
हर कला में है इसकी एहम भूमिका,
कलाकार का चाहे हो कैसा भी तरीका।

पेंसिल कहती आया मुझसे ही तुमको पढ़ना लिखना।
पेन के आ जाने पर मुझे ना तुम भूल जाना।
पेंसिल ही है जो सबके विचारों को पंख लगाती।

माना ऑनलाइन पढ़ाई ने मुझे कर दिया है तुमसे दूर,
लेकिन इसका स्नेट रहेगा हमेशा मेरे लिए भरपूर।

* *छात्र*, कक्षा-चौथी 'ई', केंद्रीय विद्यालय एन.एम.आर., जे.एन.यू. एनसीईआरटी (शाखा)